॥ श्री गणेशाय नमः ॥

सर्वदेव पूजा पद्धति

षोडशमातृकाचक्र, सप्तघृतमातृकाचक्र, स्वस्तिवाचन,
नवग्रह स्तोत्र, होमप्रकरण एवं आरती सहित

सर्वदेव पूजा

देवपूजन के लिए वेदी का बनाना सर्वप्रथम आवश्यक होता है। शुद्ध भूमि में शुद्ध मिट्टी को रखकर गेहूं के आटे के द्वारा सवा हाथ लम्बी और सवा हाथ चौड़ी वेदी बनाई जाती है। उसमें ठीक दिशाओं में नवग्रहों का चिह्न इस प्रकार बनावें—मध्य में 2 अंगुल के अष्टदल से सूर्य, आग्नेय में 24 अंगुल का अर्द्ध गोलाकार चन्द्र, दक्षिण में 4 अंगुल के त्रिकोणाकार भौम, ईशान में 9 अंगुल के धनुषाकार बुध, उत्तर में 9 अंगुल के पद्माकार गुरु, फिर पूर्व में ही 9 अंगुल के चौकोर शुक्र, पश्चिम में 9 अंगुल खड्गाकार शनि, नैऋत्य में 9 अंगुल के मच्छाकार राहु, वायव्य में 9 अंगुल के ध्वजाकार केतु लिखकर—सूर्य, मंगल में लाल रंग, बुध व गुरु में पीला रंग, शुक्र-चन्द्रमा में सफेद रंग तथा राहु-केतु-शनि में काला रंग भरें। वेदी की उत्तर दिशा में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अग्नि और सोलह मातृकाओं का स्थापन करके दक्षिण दिशा में सर्प तथा कालपूर्व में इन्द्र तथा वायु और ईशान दिशा में कलश श्री गणेश और 64 योगिनियों को भी आग्नेय

में ही स्थापना करें।

स्वास्तिक चिह्न में पीले चावल डाल कर गणेशजी को रखें। इनसे ईशान में अष्टदल कमल में अन्न रखकर कलश रखें। कलश में जल भरकर आम, वट, पीपल, गूलर और आमुन-इन पांच पेड़ों के पत्तों को रखकर डोरी बांध दें और कलश पर डोरी बंधा नारियल रखकर लाल कपड़े से ओढ़ा दें।

पूजा करते समय यजमान का मुख पूर्व तथा ब्राह्मण का उत्तर की ओर होना चाहिए।

सभी धार्मिक या सामाजिक कृत्यों के आरम्भ में कुछ क्रियाएं समान रूप से की जाती हैं। वे हैं आत्मशुद्धि, आसन-शुद्धि, संकल्प, ब्राह्मण पूजन, स्वस्ति-वाचन, मंगल-पाठ, गणेश पूजन, घटस्थापन, पुण्याह-वाचन, वरुण-पूजन। इसके अतिरिक्त किसी-किसी कर्म में नवग्रहपूजन, मातृकापूजन, नान्दीमुखश्राद्ध कुशकण्डिका और हवन भी किया जाता है।

आत्म शुद्धि— स्नान आदि करके कर्त्ता शुद्ध स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके बैठे। तब **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेतपुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥** यह मन्त्र पढ़कर अपने ऊपर जल छिड़ककर आत्मशुद्धि करें। उसके पश्चात्—

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः पढ़कर तीन बार आचमन करें।

आसन शुद्धि— इसके बाद हाथ में जल लेकर यह विनियोग करे। **ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन पवित्रकरणे विनियोगः।**

फिर ये मंत्र पढ़कर आसन पर जल छिड़क कर आसन शुद्धि करें।

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

यज्ञोपवीत—कुछ आचार्य—विशेषकर पंजाब प्रान्त के आचार्य—यजमान को यज्ञोपवीत धारण करा, पूजा में बैठाते हैं। इस प्रकार द्विजेतर यजमान को भी यज्ञोपवीत पहनाया जाता है।

यज्ञोपवीत धारण करते समय निम्नलिखित मंत्र को पढ़ें :—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

अर्थ—मैं परम पवित्र यज्ञोपवीत को धारण करता हूं, जो बल और तेज को देने वाला है।

ग्रन्थि बन्धन—यदि यजमान ग्रह शान्ति पूजन में सपत्नीक बैठे तो निम्नलिखित मंत्र के पाठ से ग्रन्थि बंधन (गठजोड़ा) करें—

ॐ यदाबध्नन दाक्षायणा हिरण्य शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आ बन्धामि शत शारदायायुष्यञ्जरदष्टिर्यथासम्॥

अर्थ—तब दीप प्रज्वलित करें।

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

अर्थ—हे दीप! आप मेरे कर्म के साक्षी रूप कर्म समाप्ति तक प्रकाशित रहें।

इन क्रियाओं के बाद इच्छित पूजन करने के लिए संकल्प करें। सामान्य संकल्प वाचन के पूर्व वैदिक मंत्र द्वारा प्रभु से प्रार्थना करें।

षोडशमातृका चक्र

पूर्व

उत्तर (बायीं ओर) — दक्षिण (दायीं ओर)

आत्मनः कुल देवता १७	लोक मातरः १३	देव सेना ९	मेधा ५
तुष्टिः १६	मातरः १२	जया ८	शची ४
पुष्टिः १५	स्वाहा ११	विजया ७	पद्मा ३
धृतिः १४	स्वधा १०	सावित्री ६	गौरी २ गणेश १

पश्चिम

सप्तघृतमातृकाचक्रम्

श्री

o
oo
ooo
oooo
ooooo
oooooo
ooooooo

कीर्तिर्लक्ष्मी धृतिर्मेधा
स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते
सप्तैता घृतमातरः ॥ १ ॥
इति वसोर्धारा

॥ संकल्प ॥

ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षेआर्यावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे अमुक संवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्माऽहं* अमुक नाम्नः प्रतिनिधित्वेन वा अमुक कामनासिद्धये अमुक (नामकर्मणि) तदंगतया विहितनिर्विघ्नतार्थं यथा सम्पादितसामग्र्या स्वस्तिवाचनं गणेशवरण-सूर्यादिनवग्रहषोडशमातृका पूजनादि च करिष्ये।

*ब्राह्मण शर्माहं, क्षत्रिय वर्माहं, वैश्य गुप्तोहं इस प्रकार बोले। दूसरे के लिए किया जाये तो 'करिष्यामि' कहे।

अपने दाहिने हाथ में चावल, जल लेकर संकल्प करें।

वेदोक्त मंगल मंत्रों को पढ़ने के बाद कर्त्ता कलश में जल भरकर उसे वेदी में स्थापित करे। फिर उस पर एक पात्र में जौ भरकर रखें और उसके ऊपर घी का दीपक जला दें। कलश पर रोचना से गणेश की आकृति बनावें। भूमि पर ग्रहों और मातृकाओं के पूजन के लिए उनके 'चक्र' बनावें। इसके बाद पूजन प्रारम्भ करें। सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा करें।

कलश की जगह पर मिट्टी और जौ रखकर कलश रखें और उसमें जल, सुपारी, पैसा, सर्वौषधि, सप्तमृत्तिका, दूर्वा, कुश, पञ्चपल्लव डालकर कलश के गले में वस्त्र अथवा मौली (नाला) बांधकर प्रार्थना करें—

॥ अथ स्वस्तिवाचनम् ॥

ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो ऽअरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु॥

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षं

पयोधा:। पयस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम्।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वां ।

ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता॥

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ᳬ शांति: पृथिवी शांतिराप: शांतिरोषधय: शांतिर्वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्व ᳬ शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शांतिरेधि॥

ॐ व्विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिनेक्षयद्वीराय प्रभरामहेमती:।

यदा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।

ॐ एतन्ते दवे सवियज्ञ म्प्राहुर्ब्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमवतेन यज्ञ पतिन्तेन मामव॥ ॐ मनोजूतिर्जुष तामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं ᳬ समिमन्दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवतु॥

इसके बाद अपने हाथ में जल लेवें।

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिंधो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

गंगा आदि तीर्थों का आवाहन करें।

ॐ गंगादिसरिद्भ्यो नम:

जल, चन्दन, चावल और फूल से पूजा प्रार्थना करें।

॥ ब्राह्मण पूजा ॥

अपने दोनों हाथों को पसार कर फूल रख मन्त्र पढ़ें।

आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव।

अनन्तर रोली के छींटे देकर पूजन करें और यह मंत्र पढ़ें।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रानाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नम:॥

जल, चन्दन, चावल, पुष्प आदि से ब्राह्मण की पूजा करें। ब्राह्मण यजमान को तिलक करें।

ॐ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मी: प्रसीदतु॥
रक्षन्तु त्वां सुरा: सर्वेसम्पदे सुस्थिरा भव॥

स्वस्तिवाचन तथा शान्ति पाठ पढ़ें। (पृष्ठ 5 से)

दैवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीना च देवता:॥
तन्मन्त्रं ब्राह्मणाधीनं तस्माद् ब्राह्मण देवता:॥

॥ गणेश पूजनम् ॥

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नम:॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम:॥ ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नम:॥ ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नम:। ॐ मातृपितृ चरणकमलेभ्यो नम:। ॐ इष्ट देवताभ्यो नम:। ॐ कुलदेवताभ्यो नम:। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नम:। ॐ स्थानदेवताभ्यो नम:। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नम:। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महागणधिपतये नम:। ॐ सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्यो नम:। ॐ गणानां त्वा गणपति ᳬ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ᳬ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ᳬ हवाममहे वसो मम। आहम जानि गर्भधमात्वजासि गर्भधम्॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नम:।

ॐ सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥। धूम्रकेतु-र्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् । येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः येषामिन्दीवरश्यामोहृदयस्थो जनार्दनः॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्द्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
स्मृतेः सकलकल्याणंभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मे शानजनार्दनाः॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशी गुहां गंगां भवानी मणिकर्णिकाम्॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्योविश्व रूपेभ्यश्च वो नमो नमः॥

अब इस मन्त्र से सामग्री चढ़ावें।

सामग्री के नाम क्रमशः यों हैं—

पाद्यम, अर्घ्यमाचमनीयम्, वस्त्रम्, यज्ञोपवीतम्, गन्धाक्षतान्, पुष्पम्, धूपम्, दीपम्, नैवेद्यम्, ताम्बूलम्, पूँगीफलम्, दक्षिणां च समर्पयामि।

॥ कलश पूजनम् ॥

अपने दाएं हाथ में फूल लेकर मन्त्र पढ़ें।

प्रभासं पुष्करं चैत्र नैमिषं च हिमालयम्।
वटेश्वरं त्रिभुक्तं च कुम्भमावाहयाम्यहम्।

इस मन्त्र से रोली के छींटे दें।

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्जनी-स्थोव्वरुणस्यऽ ऋत सदन्यसि व्वरुणस्यऽऋत-सदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥

इसके बाद इस मन्त्र से सामग्री चढ़ाकर हाथ जोड़ नमस्कार करें।

''पाद्यम्अर्घ्यमाचमनीयम् ०'' (पृष्ठ ९)

देवदानसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्यावसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥
सान्निध्यं कुरु मे दवे प्रसन्नो भव सर्वदा॥

॥ ओंकार पूजनम् ॥

हाथ में फूल, चावल लेकर ओंकार का आवाहन करें।

आवाहयाम्यहं देवं ओकारं परमेश्वरम्।
त्रिमात्रं त्र्यक्षरं दिव्यं त्रिपदश्च त्रिदेवकम्॥

फूल, चावल चढ़ा देवें। इस मन्त्र से रोली के छींटे देकर पूजन करें।

ओंकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः।

इस मन्त्र को पढ़ते हुए सब सामग्री चढ़ाकर हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

त्र्यक्षरं त्रिगुणाकारं सर्वाक्षरमयं शुभम्।
त्र्यर्णवं प्रणवं हंसं स्रष्टारं परमेश्वरम्॥

॥ ब्रह्मपूजा ॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सुबुद्ध्याऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।

॥ विष्णु पूजनम् ॥

हाथ में फूल लेकर आवाहन करें।

केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम्।
रुक्मिणी-सहितंदेवंविष्णुआवाहयाम्यहम्।

पुष्प चढ़ाकर इस मंत्र से रोली के छींटे देकर पूजन करें।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेऽस्थो विष्णोः स्युरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

पूजन के बाद पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्॥ (पृष्ठ ९)

समस्त सामग्री चढ़ाकर इस मंत्र द्वारा हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

॥ शिव पूजनम् ॥

हाथ में चावल लेकर यह मंत्र पढ़ें।

ॐ शिवशंकरमीशानं द्वादशार्द्धं त्रिचोलनम्।
उमयासहितं देवं शिवं आवाहयाम्यहम्॥

पुष्प और चावल चढ़ा दें।

इस मंत्र से रोली के छींटे देकर पूजन करें।

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च। नमः शंकराय च मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिवतराय च॥

इसके बाद—

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् **(पृष्ठ ९)**

इत्यादि मन्त्र से सब सामग्री चढ़ाकर हाथ जोड़ इस मंत्र द्वारा नमस्कार करें।

रुद्राक्ष कंकणलसत्करदण्डयुग्मं, भालान्तरालचित भस्मधृतं त्रिपुण्डम्। पंचाक्षरी परिपठन् वरमन्त्रराजं, ध्यायेत्सदा पशुपतिं शरणं व्रजेऽहम्॥

पश्चात् ॐ नमः शिवाय का जप करें।

॥ लक्ष्मी पूजनम् ॥

हाथ में चावल, फूल लेकर लक्ष्मी जी का आवाहन करें।

ॐ समुद्रतनयां देवी सर्वाभरणभूषिताम्।
पद्मनेत्रां विशालाक्षीं लक्ष्मीमावाहयाम्यहम्॥
विष्णुप्रीतिकरीं देवी देवकार्यार्थसाधिनीम्।
कुबेरधनदात्रीं च लक्ष्मीं आवाहयाम्यहम्।

फूल, चावल चढ़ा दें और हाथ पसार कर कहें।

आगच्छ भगवति देवि स्थाने चात्र स्थिरा भव।
यावत्पूजां करिष्येऽहं तावत्त्वं सुस्थिरा भव।

इस मंत्र से रोली के छींटे दें।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इषणन्निषाणा-मुम्मइषाण सर्वलोकंम्मइषाण।

इसके बाद—

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्। (पृष्ठ ९)

सब सामग्री चढ़ा हाथ जोड़कर इस मंत्र द्वारा नमस्कार करें।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

॥ षोडशमातृका पूजनम् ॥

रोली का छींटा देकर पूजन करें।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः। हृष्टिः पुष्टि स्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता॥ गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥ (पूजन के बाद)

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पृष्ठ ९)

सामग्री चढ़ावें।

॥ वास्तुपूजनम् ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा। वासुक्यादि अष्टकुल नागेभ्यो नमः।

॥ योगिनी पूजनम् ॥

रोली से छींटे देकर पूजन करें।

आवाहयाम्यहं देवीः योगिनीः परमेश्वरीः। योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यानसमन्विताः।

इससे सामग्री चढ़ावें और हाथ जोड़ प्रार्थना करें।

दिव्यकुण्डलसंकाशा दिव्यज्वाला त्रिलोचना। मूर्तिमतीह्यमूर्त्ता च उग्रा चैवोग्ररूपिणी। अनेकभावसंयुक्ता संसारार्णवतारिणी यज्ञे कुर्वन्तु

निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः। दिव्ययोगी-महायोगी सिद्धयोगी गणेश्वरी। प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्री निशाचरी। हुँकारी सिद्धवेताली खर्परी भूतगामिनी। ऊर्ध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कांगी मांस भोजिनी॥ फूत्कारी वीरभद्राक्षी धूम्राक्षी कलहप्रिया। रक्ता च घोर रक्ताक्षी विरूपाक्षी भयंकरी। चौरिका भारिका चण्डी वाराही मुण्डधारिणी भैरवी चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेतवासिनी। कालाक्षी मोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी। कुण्डला ताल कौमारी यमदूती करालिनी। कोशिकी यक्षिणी यक्षी कौमारी यन्त्रवाहिनी। दुर्घटा विकटा घोरा कपाला विषलंघना। चतुः षष्ठिः समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः। त्रैलोक्यपूजिता नित्यं देव मानुषयोगिभिः॥

॥ इन्द्रपूजनम् ॥

रोली से छींटे देकर पूजन करें।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ॐ इन्द्राय नमः।

इस मंत्र से सामग्री चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पृष्ठ ९)

॥ वायु पूजनम् ॥

रोली से छींटा देकर पूजन करें।

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वाँ सोमपीतये॥

ॐ वातोवामनो वा गन्धर्वाः सप्तवि ꣳ शतिः। तेऽअग्रेश्वमुयञ्जँ स्तेस्मिञ्जवमादधुः। ॐ वायवे नमः। ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पृष्ठ ९)

सामग्री चढ़ा दें।

॥ अग्नि पूजनम् ॥

रोली का छींटा देकर पूजन करें।

ॐ अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासो ऽअदाभ्यम्। चित्रावासो स्वस्ति ते पारमशीय॥ ॐ श्री अनलाय नमः।

इस मंत्र से सामग्री चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्य आचमनीयम्। (पृष्ठ ९)

॥ धर्म पूजनम् ॥

हाथ में चावल लेकर यह मंत्र पढ़ें।

ॐ अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धा सोऽअदाभ्यम्। चित्रावासो स्वस्ति ते पारमशीय॥ ॐ धर्माय नमः।

॥ यम पूजनम् ॥

रोली का छींटा देकर पूजन करें।

ॐअसि यामो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितोगुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते दिवि बन्धनानि। ॐयमाय नमः।

सामग्री चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्य आचमनीयम् (पृष्ठ ९)

॥ सूर्यस्यावाहनम् ॥

हाथ में फूल लेकर कहें—

**दिवाकरं सहस्रांशु ब्रह्माद्याश्च सुरैर्नुतम्।
लोकनाथं जगच्चक्षुः सूर्य आवाहयाम्यहम्॥**

फूल, चावल चढ़ा दें और इस मंत्र से रोली के छींटे देकर पूजन करें।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्। (पृष्ठ ९)

सब वस्तुएं चढ़ा हाथ जोड़कर इस मन्त्र द्वारा नमस्कार करें।

**जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरि सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥**

॥ चन्द्रपूजनम् ॥

हाथ में फूल, चावल लेकर बोलें—

**हिमरश्मि निशानाथं तारकापतिमुत्तमम्।
ओषधीनां च राजानं चंद्रं आवाहयाम्यहम्।**

इस मंत्र से रोली के छींटे देते हुए पूजन करें।

इमंदेवा असपत्न छ सुवध्वंमहते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुस्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना छ राजा।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पृष्ठ ९)

सभी वस्तुएँ चढ़कार इस मंत्र से हाथ जोड़ें।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। ज्योत्सनापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥ श्री चन्द्रदेवाय नमः॥

॥ भौम (मंगल) पूजनम् ॥

हाथ में फूल, चावल लेकर आवाहन करें।

**धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावहायाम्यहम्॥**

फूल, चावल चढ़ाकर रोली के छींटे अगले मन्त्र द्वारा दें।

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपाछ रेताछ सि जिन्वती॥

अगले मंत्र से ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पृष्ठ ९)

जल, चन्दन, चावल चढ़ाकर अगले मन्त्र द्वारा हाथ जोड़ें।

**धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौमदेवं नमाम्यहम्॥**

॥ बुधस्य पूजनम् ॥

हाथ में पुष्प, चावल लेकर आवाहन करें।

बुधंबुद्धिप्रदातारं होमवंशप्रवर्धनम्।
यजमानहितार्थाय बुधं आवाहयाम्यहम्॥

हाथ की वस्तुएं चढ़ाकर अगले मंत्र से रोली के छींटे दें।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सः १३ सुजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

अगले मंत्र से सामग्री चढ़ावें।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्॥ (पृष्ठ ९)

अगले मंत्र से हाथ जोड़ें।

प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधमावाहयाम्यहम्॥

॥ बृहस्पत्यावाहनम् ॥

हाथ में फूल और चावल लेकर ध्यान करें।

ॐ गुरुं श्रेष्ठांगिरः पुत्रं देवानां च पुरोहितम्।
शुक्रस्य मन्त्रिणां श्रेष्ठं गुरुं आवाहयाम्यहम्॥

पुष्प और चावल चढ़ाकर रोली के छींटें अगले मंत्र से दें।

ॐ बृहस्पतेऽ अतियदर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

अगले मंत्र से जल, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादि चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्। (पृष्ठ ९)

अगले मंत्र से हाथ जोड़ें।

देवानाञ्च वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरूमावाहयाम्यहम् गुरुं काञ्चनसन्निभम्॥ श्री गुरवे नमः।

॥ शुक्र पूजनम् ॥

हाथ में पुष्प और चावल लेकर ध्यान करें।

प्रविश्य जठरे शम्भोनिष्क्रान्तः पुनरेव यः।
आचार्यमसुरादीनां शुक्र आवाहयाम्यहम्॥

पुष्प, चावल चढ़ाकर रोली से पूजन करें।

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानः १३ शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

अगले मंत्र से वस्तुएं चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्। (पृष्ठ ९)

अब हाथ जोड़ें।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्र प्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥ श्रीशुक्राय नमः।

॥ शनि पूजनम् ॥

हाथ में पुष्प, चावल लेकर आवाहन करें।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड-सम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

चावल, फूल चढ़ाकर रोली के छींटे दें।

ॐ शंनो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः॥

आगे के मंत्र से—

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्। (पृष्ठ ९)

अब हाथ जोड़ें।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड-सम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

॥ राहु पूजनम् ॥

हाथ में फूल, चावल लेकर ध्यान करें।

ॐ चक्रेण छिन्नमूर्द्धानं विष्णुना च निरीक्षितम्।
सैंहिकेय महाकायं राहुमावाहयाम्यहम्।

पश्चात् रोली के छींटे दें।

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा।
कया शचिष्ठयावृता॥

अब सामग्री चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्। (पृष्ठ ९)

अब हाथ जोड़ें।

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।

॥ केतु पूजनम् ॥

हाथ में पुष्प, चावल लेकर आवाहन करें।

ॐ ब्रह्मणः कुलसम्भूतं विष्णुलोकभयावहम्।
शिखिनन्तु महाकायं केतुमावाहयाम्यहम्॥

रोली के छींटे दें।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः।

पश्चात्, जल, नैवेद्यादि सामग्री चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्। (पृष्ठ ९)

अब हाथ जोड़ें।

पालाशधूम्र संकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

हाथ जोड़कर देवताओं को नमस्कार करें।

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

॥ ऋषि पूजनम् ॥

अब पुरोहित यजमान के हाथों में, चावल, घास (दूर्वा) देकर ऋषि पूजन करते समय नीचे लिखा मंत्र पढ़ें।

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्।
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवी वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥ १॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥ २॥
दैत्याचार्य नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥ ३॥
शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनीश्चैव तपोधनान्।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥ ४॥
वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम्।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम्॥ ५॥
विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा॥ ६॥

हाथ की वस्तुओं को देवताओं पर चढ़ा देंवे और फिर चावल हाथ में लेकर दसों दिशाओं में इन श्लोकों द्वारा थोड़ा-थोड़ा फेंकते रहें।

ॐ पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
याम्यां रक्षतु वाराहो नृसिंहश्च नैर्ऋते॥ १॥
वारुण्यां केशवे रक्षेद् वायव्यां मधुसूदनः।
उत्तरे श्रीधरो रक्षे दीशाने तु गदाधरः॥ २॥
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेत् अधस्ताच्च त्रिविक्रमः।
एवं दशदिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः॥ ३॥

इस मन्त्र से यजमान पुरोहित के तिलक करे।

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

इस मन्त्र से यजमान पुरोहित के हाथ में कलावा बाँधें।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

इस मंत्र से पुरोहित यजमान के हाथ में रक्षाबंधन करे।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

पुरोहित इस मंत्र द्वारा यजमान को पुष्प चावल से आशीर्वाद प्रदान करें।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥
ॐ आयुष्कामः यशस्कामः पुत्रकामस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते।

पुरोहित को दक्षिणा देते समय यह मंत्र पढ़ें।

उपचारेषु यन्न्यूनं पूजाकालेषु यद्भवेत्।
न्यूनंसम्पूर्णतां याति दक्षिणायाः प्रसादतः।

इसके बाद जो भी यज्ञादि अन्य कार्य करने हों, करें। अन्त में इन मंत्रों से क्षमा प्रार्थना करें।

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर॥ २ ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष त्वं परमेश्वर॥ ३ ॥

फिर हाथ में चावल लेकर ग्रहों का विसर्जन करें अर्थात् इस मंत्र से ग्रहों पर चावल छोड़ें।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकाम-समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ ४॥
लक्ष्मीं कुबेरञ्च सरस्वतीं विहाय सर्वेदेवा स्वस्थानं गच्छन्तु।

गणेश और लक्ष्मी यहां वास करें और अन्य देवता अपने स्थानों को प्रस्थान करें—ऐसा कहकर विसर्जन करें।

॥ अथ नवग्रहस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥ १ ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्॥ २ ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्॥ ३ ॥
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥ ४ ॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥ ५ ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ ६ ॥
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ ७ ॥
अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥ ८ ॥
पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकसम्।
रौद्र रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥ ९ ॥
इति व्यासमुखोद् गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति॥ १० ॥
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुः स्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥ ११ ॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥ १२ ॥

इति श्रीवेदव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

॥ अथ होमप्रकरणम् ॥

हवन सामग्री—हवन के लिए सबसे अधिक तिल, तिल से आधे चावल, चावल से आधे जौ, जौ से आधी शक्कर और घी इतना होवे कि सब सामग्री उसमें मिल जावे। मेवा यथा शक्ति लीजिए।

अथ घृताहुतिः।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा त्यजेत्॥

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम। इत्याधारौ।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम। इत्याज्यभागौ।

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम। एता महाव्याहृतयः।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्यहेडाऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषासि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥

ॐ सत्वन्नोऽ अग्नेऽ वतोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्वनो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो नऽएधि स्वाहा॥ इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।

ॐ अयाश्चाग्ने स्यनिभिशस्ति पाश्च सत्वमित्वमया असि अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितत महान्तस्तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुंविश्वे मुचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे

विष्णावे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदबाधमं विमध्यम ꣳ श्रथाय। अथाव्वयमादित्य व्रते तवानगसोऽअदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यादितये च न मम॥ एताः सर्वाः प्रायश्चितसंज्ञकाः।

ॐ गणपतये स्वाहा। इदं गणपतये न मम

ॐ विष्णावे स्वाहा। इदं विष्णावे न मम

ॐ शंभवे स्वाहा। इदं शंभवे न मम

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै न मम

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। इदं सरस्वत्यै न मम

ॐ भूम्यै स्वाहा। इदं भूम्यै न मम

ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम

ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम

ॐ भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय न मम

ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय न मम

ॐ बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये न मम

ॐ शुक्राय स्वाहा। इदं शुक्राय न मम

ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय न मम

ॐ राहवे स्वाहा। इदं राहवे न मम

ॐ केतवे स्वाहा। इदं केतवे न मम

ॐ व्युष्ट्यै स्वाहा। इदं व्युष्ट्यै न मम

ॐ उग्राय स्वाहा। इदं उग्राय न मम

ॐ शतक्रतवे स्वाहा। इदं शतक्रतवे न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा।

ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम।

ॐ सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥ १॥

ॐ सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥ २॥

ॐ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ ३॥

ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरूषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥ ४॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतरग्निः स्वाहा॥ १॥

ॐ अग्निवर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा ॥ २॥

ॐ अग्निर्ज्योतिः र्ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ ३॥

ॐ सजूर्देवेन सवित्रासजूरायेन्द्रवत्या जुषाणोऽअग्निर्वेतु स्वाहा॥ ४॥

स्रुव (पात्र) में सुपारी इत्यादि लेकर पूर्णाहुति दें।

ॐ मूर्द्धानं दिवाऽअरति पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।

कविंध्र संम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा।

॥ इति ॥

॥ आरती श्री जगदीश्वर जी ॥

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट छिन में दूर करे॥ ओं.
जो ध्यावै फल पावे, दुख बिनसै मन का। प्रभु.
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का॥ ओं.
मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी। प्रभु.
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी॥ ओं.
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तरयामी। प्रभु.
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ओं.
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता। प्रभु.
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ओं.
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। प्रभु.
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ओं.
दीन बन्धु दुख हर्ता तुम ठाकुर मेरे। प्रभु.
अपने हाथ उठाओ, द्वारा पड़ा तेरे॥ ओं.
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। प्रभु.
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ओं.
प्रेम सभा जन तुमको, निशिदिन ही ध्यावें। प्रभु.
पार लगा दो नैया, यही अरज गावें॥ ओं.
प्रभु जी की आरती, जो कोई नर गावे। प्रभु.
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित फल पावे॥ ओं.